''बून्दी जिले में चावल मिल उद्यम की समस्याऐं एवं सम्भावनाऐं–एक संकल्पनात्मक रूपरेखा''

*डॉ. आशुतोष बिरला

परिचय :–

मानव जीवन के लिए भोजन, वस्त्र एवं आवास तीन मूलभूत आवश्यकतायें हैं। भोजन के रूप में चावल मानव द्वारा प्रयुक्त एक प्रमुख खाद्यान्न है जिसमें मानव शरीर के लिए आवश्यक कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन व खनिज पदार्थ पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। राजस्थान में बून्दी जिला चावल उत्पादन का प्रमुख केन्द्र है। धान से चावल बनाने की प्रक्रिया वर्तमान में कुटीर उद्योग से आधुनिक मशीनीकृत उद्योग में परिवर्तित हो गई है। बून्दी जिले में वर्तमान में 20 चावल मिलें हैं जिनमें से अधिकांश अर्द्धस्वचालित हैं जिससे चावल मिल उद्यमियों के समक्ष कई चुनौतियाँ आ रही हैं।

धान प्राप्त करने से लेकर चावल बनने तक की प्रक्रिया तथा इस दौरान चावल मिल उद्यमियों के समक्ष आ रही समस्याओं तथा सम्भावनाओं को प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से प्रकट किया है।

उद्देश्य :–*प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्यों में –*

- धान से चावल बनने की सम्पूर्ण प्रक्रिया की जानकारी प्रदान करना
- इस प्रक्रिया के दौरान आने वाली समस्याओं की जानकारी प्रदान करना
- बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था में चावल मिल उद्योग की महत्त्वपूर्ण भूमिका की जानकारी प्रदान करना रहा है।

शोध विधि :–

शोध अध्ययन में प्रमुख रूप से प्राथमिक स्त्रोत के रूप में चावल मिलों का भ्रमण कर प्राप्त जानकारी को आधार बनाया है। धान से चावल बनने की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न छायाचित्र लिए हैं, द्वितीयक स्त्रोत के रूप में चावल मिल उद्यमियों से प्राप्त जानकारी को आधार बनाया है।

Key Map of Bundi District

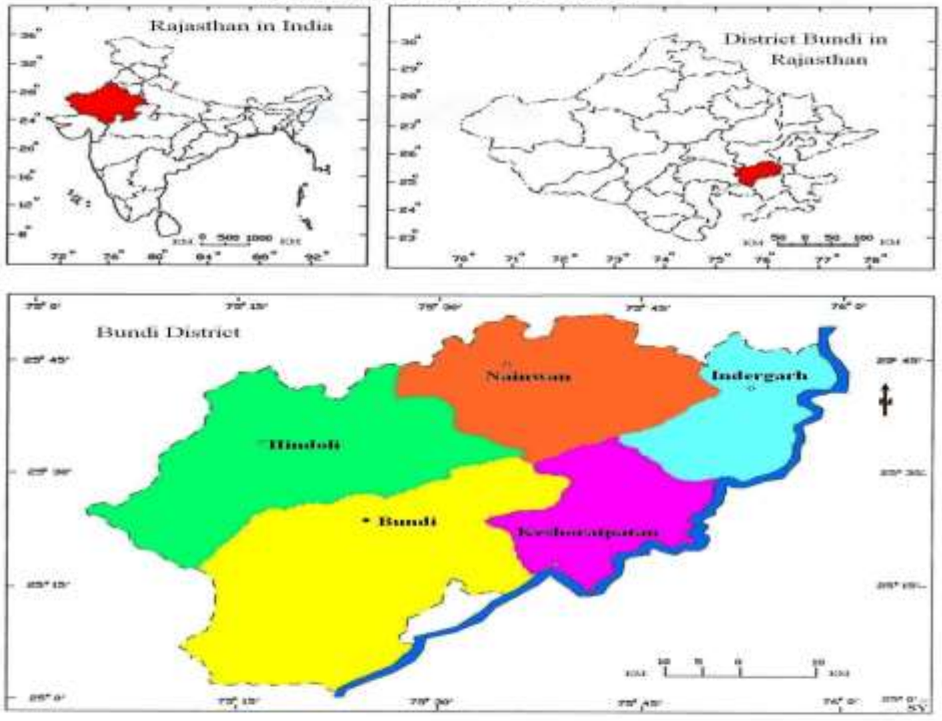

अध्ययन क्षेत्र :–

राजस्थान के द.पू. में स्थित बून्दी जिला $24^0$59'11" से $25^0$53'11" उ. अंक्षाश तथा $75^0$19'30" से $76^0$19'30" पू. देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5850 km^2 है। उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई 104.6 km तथा पूर्व से पश्चिम तक इसकी लम्बाई 111km है। जिले के पश्चिम में भीलवाड़ा, उत्तर में टोंक व सवाई माधोपुर, द.प. में चित्तौड़गढ़ व दक्षिण में कोटा जिला है दक्षिण में चम्बल नदी कोटा व बून्दी जिले की सीमा बनाती है मेज, मांगली, घोड़ा–पछाड़, चन्द्रभागा, कुराल अन्य प्रमुख नदियाँ हैं।

जिले की जलवायु सामान्यतः द.प. मानसून को छोड़कर शुष्क रहती है औसत वार्षिक वर्षा 809 mm है। 90% वर्षा जून से सितम्बर के मध्य होती है शीतकाल में जिले का न्यूनतम तापमान 2^0c तथा ग्रीष्मकाल में अधिकतम 48^0c तक पहुँच जाता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की जनसंख्या 1110906 रही। घनत्व 193 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., साक्षरता दर 62.31% तथा लिंगानुपात 922 रहा। जिले में कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल 200000 हैक्टेयर है, जिसमें से खरीफ के समय धान की कृषि लगभग 20000 हैक्टेयर में की जाती है। बून्दी जिले में बासमती चावल का उत्पादन होता है जो स्वाद से परिपूर्ण होता है, जिसका उपयोग खाद्यान्न के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने में किया जाता है।

धान से चावल निर्माण की प्रक्रिया :–

चावल मिलों द्वारा धान से दो प्रकार का चावल तैयार किया जाता है :–

कच्चा चावल (RAW RICE)

सेला चावल (PARABOILLED RICE)

धान से चावल बनने की प्रक्रिया निम्न चार्ट से स्पष्ट है :–

FLOW CHART FOR RAW/PARABOILLED RICE MANUFACTURE

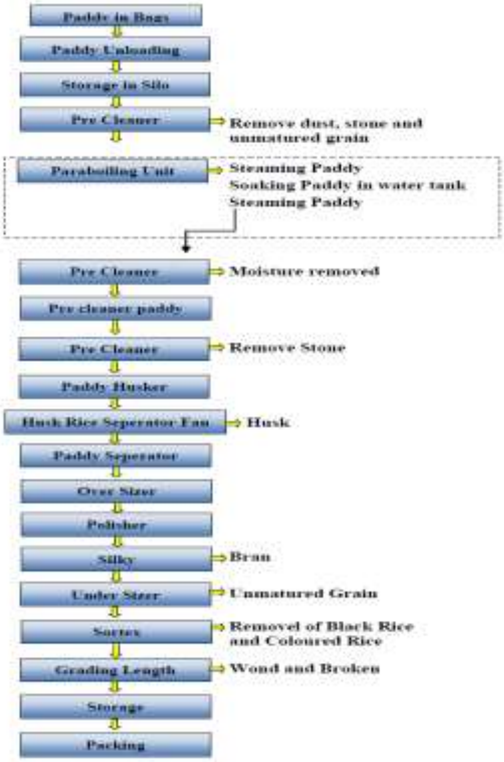

PLATE-1
RICE MILL
INSIDE
OUTSIDE
BOILER

PLATE-2
RAW RICE
PARA BOILED RICE
PADDY INPUT
PADDY INPUT
PRE CLEANER

PLATE-3
DRYER
PARA BOILING UNIT
STEAMING AND SOAKING OF PADDY
STEAMING AND SOAKING OF PADDY

PLATE-4
PRE CLEANER PADDY
DE STONING
PADDY HUSKER
OVER SIZER

धान से चावल बनने की प्रक्रिया में चावल व अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं जिसे निम्न चार्ट से समझा जा सकता है :–

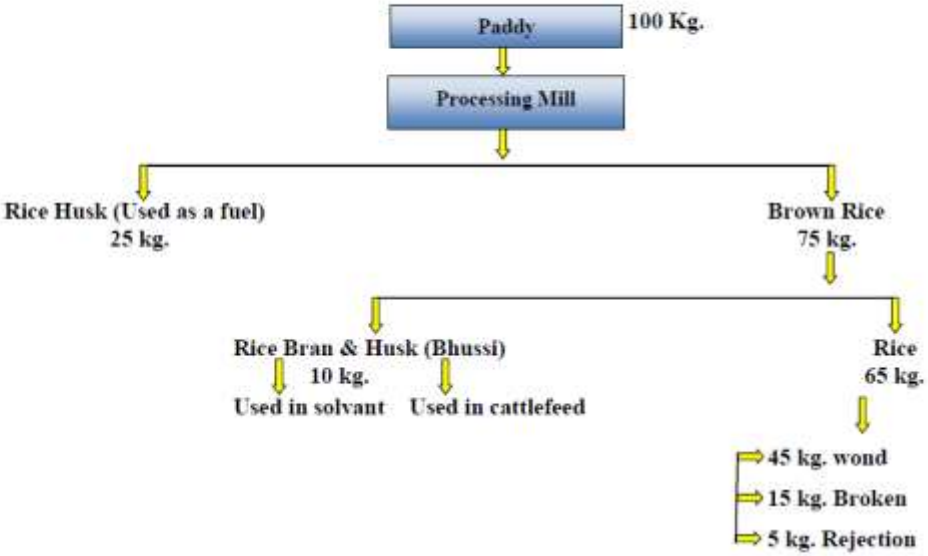

चावल मिल उद्योग संचालन में उद्यमियों के समक्ष आने वाली समस्यायें :–

1. कच्चे माल सम्बन्धी समस्या :– चावल उद्योग के लिए प्रमुख कच्चा माल धान है लेकिन यहां उत्तम किस्म के बीजों की उपलब्धता में कठिनाई आती है जिससे धान की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है। वहीं मानसून की अनिश्चितता व अनियमितता के कारण भी धान की कृषि का क्षेत्र कम–ज्यादा होता रहता है जिससे भी कच्चे माल की समस्या सामने आती है।

2. खरीद प्रक्रिया सम्बन्धी समस्या :– चावल मिल उद्यमियों को कच्चा माल कृषि उपज मंडियों में नीलामी से लेना पड़ता है, जिसमें मिल मालिकों को धान की कीमत के अतिरिक्त धान के मूल्य का 2% कच्ची आढ़त के रूप में देना पड़ता है। जिससे उनकी धान खरीद की लागत बढ़ जाती है। वहीं किसानों को भी इसका कोई लाभ नहीं मिलता वरन् उन्हें भी कच्ची आढ़त का शुल्क चुकाना पड़ता है।

3. तकनीक सम्बन्धी समस्या :– बून्दी जिले में स्थापित अधिकांश चावल मिलें आज भी अर्द्ध स्वचालित अवस्था में हैं, जिसके कारण उनमें विद्युत की खपत अधिक होती है तथा चावल निर्माण की प्रक्रिया में Broken की मात्रा बढ़ती है जिससे चावल की लागत में वृद्धि होती है।

4. वित्त सम्बन्धी समस्या :– चावल मिल उद्यमियों को धान खरीदने से लेकर चावल निर्माण प्रक्रिया तक बड़ी मात्रा में वित्त की आवश्यकता होती है यद्यपि वर्तमान में कई बैंकों व वित्तीय संस्थाओं द्वारा आवश्यक ऋण उपलब्ध कराया जाता है किन्तु उनकी ब्याज दर अधिक होने के कारण चावल मिल उद्यमियों के समक्ष वित्त की समस्या उत्पन्न होती है।

5. विपणन सम्बन्धी समस्या :– चावल निर्माण के बाद उसका विपणन भी एक प्रमुख चुनौती है क्योंकि सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाओं में सस्ता चावल उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे चावल की घरेलू मांग में कमी आ रही है वहीं अन्तर्राष्ट्रीय मांग में उतार–चढ़ाव के कारण भी निर्यात पर विपरीत प्रभाव पड़ता है अतः चावल का विपणन भी मिल उद्यमियों के समक्ष एक चुनौती है।

6. अन्य समस्यायें :– इन उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त

- **(i)** डीजल की कीमतों में लगातार वृद्धि के कारण परिवहन लागत में निरन्तर वृद्धि होने से चावल लागत में वृद्धि होना
- **(ii)** चावल पैकिंग सामग्री की समय पर आवश्यकतानुसार उपलब्धता न हो पाना
- **(iii)** विद्युत कटौती से भी मिल संचालन में समस्या उत्पन्न होती है।
- **(iv)** कुशल श्रम स्थानीय स्तर पर उपलब्ध न हो पाने से लागत में वृद्धि होना
- **(v)** चावल निर्माण प्रक्रिया में प्राप्त उप उत्पादों (By Products) जैसे भूसी, ब्रान आदि का स्थानीय स्तर पर उपयोग न हो पाना
- **(vi)** सरकारी संरक्षण व प्रोत्साहन नहीं मिलना आदि समस्यायें भी उद्योग के विकास में प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

सम्भावनायें :– बून्दी का चावल उद्योग उत्तम किस्म, सुगंधित व स्वादिष्ट चावल के लिए विश्व में अपनी प्रमुख पहचान रखता है साथ ही बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था की धूरी भी है। इस महत्ता के कारण इसकी उत्तरोत्तर प्रगति भी आवश्यक है। इसके लिए निम्न समस्यायें हो सकती हैं :–

1. उत्तम किस्म के धान के बीजों का वितरण सुनिश्चत किया जाये तथा कम पानी की आवश्यकता वाली किस्मों का अविष्कार कर उनको बढ़ावा दिया जाये।
2. मानसून की अनिश्चितता व अनियमितता के कारण सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए नहरी तन्त्र को सुदृढ़ किया जाये।
3. वर्षाकाल में चम्बल परियोजना में बने बांधों से जल नदी में छोड़ने के साथ–साथ नहरों में भी जल प्रवाह किया जाये।
4. मिलों द्वारा धान खरीद की प्रक्रिया को सरल व व्यवहारिक बनाया जाये, किसानों व उत्पादकों को सीधा जोड़ा जाये।
5. आधारभूत सुविधाओं (परिवहन, विद्युत, बैंकिंग) के विस्तार की प्रक्रिया तीव्र की जाये।
6. चावल मिलों के आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया जाये।
7. चावल मिल उद्यमियों को नवीन तकनीक लाने के लिए अनुदान तथा उद्योग में आवश्यक पूंजी की उपलब्धता के लिए कम ब्याज दर पर ऋण सुविधा उपलब्ध करायी जाये।
8. चावल मिल में जल पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित किया जाये।
9. चावल निर्माण प्रक्रिया में प्राप्त उप उत्पादों के उपयोग के लिए कैटलफीड प्लान्ट व सोल्वेन्ट प्लान्ट स्थापना को प्रोत्साहित किया जाये।
10. औद्योगिक सम्वर्द्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किये जाये।
11. सरकार द्वारा R & D (Research and Developement) विभाग स्थापित किया जाये जो लगातार धान की किस्म में सुधार व चावल निर्माण तकनीक को अद्यतन (Update) करने का कार्य करें।

निष्कर्ष :–प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा बून्दी जिले में स्थापित चावल उद्योग की सम्पूर्ण प्रक्रिया (धान प्राप्ति से लेकर चावल निर्माण तक) की जानकारी प्रदान की गई है इस प्रक्रिया के दौरान चावल मिल उद्यमियों के समक्ष आने वाली समस्याओं तथा सम्भावनाओं पर भी प्रकाश डाला है। यदि सम्भावनाओं के रूप में समाधान व सुझावों को हमल में लाया जाता है तो बून्दी जिले में स्थापित यह उद्योग चावल के क्षेत्र में अपनी विश्व प्रसिद्ध पहचान को बनाये रखते हुए निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो सकता है तथा बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाईयों की ओर ले जा सकता है।

***सहायक आचार्य भूगोल**
राजकीय महाविद्यालय,
देवली

सन्दर्भ सूची :–

www.bundi.nic.in